JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'शबनम मौसी' में अभिव्यक्त थर्ड जेंडर समस्याएं

Dr Indu K V
Assistant Professor
SDE, University of Kerala

आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिस पर फिल्मी प्रभाव न हो। पहले केवल पौराणिक और धार्मिक विषयों पर फिल्में बनती थीं। आज कोई भी विषय फिल्मों से अछूता नहीं है। जीवन के हर पहलू पर फिल्में बन रही हैं। बड़ा परदा मनोरंजन का सबसे सस्ता व सुलभ साधन है। मनोरंजन के अतिरिक्त भी फिल्मों के अपने फायदे हैं| फिल्मों के सदुपयोग द्वारा शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार के कार्यों में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की जा चुकी है। फिल्मों के माध्यम से देश विदेश का ज्ञान एवं इतिहास, सभ्यता व संस्कृति की जानकारी बड़ी आसानी से हो जाती है। लेकिन सिनेमा को ज़्यादातर लोग मनोरंजन का साधन ही मानते हैं| हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार और पटकथाकार राही मासूम रज़ा ने कहा है कि "सिनेमा के संबंध में हमारे बुद्धिजीवियों का बहुत दिलचस्प रवैया है| वे फ़िल्में देखते तो है लेकिन उनपर गंभीर चर्चा नहीं करना चाहते|"[1] फिल्मों का स्तर बढाने के लिए उन पर गंभीर चर्चा की आवश्यकता है| सिनेमा अपने दर्शक को कभी नज़र अंदाज़ नहीं कर सकता| आम आदमी का साहित्य से उतना संबंध नहीं है जितना फिल्म का है| राही मासूम रज़ा के अनुसार "सिनेमा उन लोगों तक भी पहुँच जाता है जो लिखना नहीं जानते| भारत जैसे अशिक्षित देश में सिनेमा की कला के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकते| भारत के 96% आबादी के लिए छपा हुआ या लिखा हुआ शब्द अर्थहीन है| लेकिन वही शब्द अगर सुना जाये तो उसकी पहुँच बढ़ जाती है| पूरे भारत में हिन्दी फिल्मों की प्रसिद्धि इस बात का प्रमाण है| सिनेमा की पहुँच छपे हुए शब्दों से अधिक है|"[2] आजकल विभिन्न विमर्शों पर चर्चाएँ ज़ारी हैं जिनसे साहित्य के समान फिल्म भी अछूता नहीं है, किन्नर विमर्श से संबंधित अनेक फिल्म सभी भारतीय भाषाओं में आ चुके हैं|

किन्नर या तृतीयलिंगी/उभयलिंगी विमर्श

"कैसा दर्द है, स्वीकृत होकर भी, अस्वीकृत है,

सभ्य समाज से वे आज भी बहिष्कृत हैं,

लेकिन बिना उनके प्रदर्शन के सभी खुशी अधूरी है,

शादी, विवाह, गृहप्रवेश पर जिनसे ही जमता रंग है,

कोई और नहीं हैं वो, दिखते तो हमीं जैसे,

किन्तु फिर भी तृतीय लिंग है, तृतीय लिंग है|"[3]

आजकल तृतीयलिंगी विमर्श पर जोर से चर्चाएँ हो रही हैं| अनेक आलोचकों ने तृतीयलिंगी की परिभाषा अपने अपने हिसाब से बनाई है| उर्मिला पोडवाल के अनुसार "ऐसे मानव किन्नर समाज कहलाते है जो लैंगिक रूप से न नर होते है न मादा| आमतौर पर न पुरुष और न ही महिला, ये एक तीसरे लिंग के रूप में पहचान जाते हैं|"[4] इसलिए किन्नर को तृतीय लिंगी भी कहा जाता है| लेकिन इनको किसी जेंडर पर आधारित न मानकर मानवतावाद से जोड़ना अधिक समीचीन लगता हैं| संस्कृत में किन्नरों को 'किंपुरुष' कहा जाता है| पौराणिक काल से ही किन्नरों का उल्लेख मिलता हैं| महाभारत में शिखंडी हिजड़ा या तृतीय लिंगी है| दिलीप मेहरा के अनुसार "द्रौपदी और धृष्टद्युम्न का भाई शिखन्डी भी एक किन्नर था जिसके कारण अर्जुन भीष्म पितामह का वध कर पाए|"[5] हिजड़ों को पुराने ज़माने से लेकर मंगल कार्यों में आशीर्वाद देने के लिए बुलाये जाते हैं| इस रिवाज के पीछे का कारण बताते हुए डॉ के वनजा कहते है कि "रामायण में पिता के वचन पालनार्थ राम चौदह वर्षों के वनवास के लिए सीता और लक्ष्मण के साथ जब निकलते है तो अयोध्यावासी एक साथ उनका पीछा करता है| जब जंगल में प्रवेश करने लगते है तब राम स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों को वापस जाने को कहते है| हिजड़ा लोग वापस लौटते नहीं हैं| 14 वर्षों के बाद वनवास से लौटते समय श्रीराम ने उनसे वहां रुके रहने का कारण पूछा, तब श्रीराम के कथन को किन्नरों ने स्पष्ट किया कि प्रभु आपने नर और नारी को वापस जाने की आज्ञा दी किन्तु हमारे संबंध में कुछ नहीं कहा | इस प्रसंग का उल्लेख रामचरितमानस में देखने को मिलता है:

"जथा जोगु करि विनय प्रनामा बिदा किए सब सानुज रामा|

नारी पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सनमानी कृपानिधि फेरे||

कहा जाता है कि हिजड़ों की इस निश्चल एवं निस्वार्थ भक्ति भावना को देखकर श्रीराम ने उन्हें वरदान दिया था, कलियुग में तुम्हारा ही राज होगा और तुम लोग इसको ही आशीर्वाद दोगे उसका अनिष्ट नहीं होगा| रामचरितमानस में उनके संबंध में ओर भी उल्लेख है, जैसे :

पुरुष नपुंसक नारी वा जीव चराचर कोई |

सर्व भाव भज कपत्त तजि मोहि परम प्रिय सोई||

अर्थात चराचर जगत में कोई भी जीव हो चाहे वह स्त्री, पुरुष, नपुंसक, देव, दानव मानव आदि अगर वह सम्पूर्ण कपट को त्यागकर मुझे भजता है वह मुझे प्रिय है|

महाभारत में पांडवों से शिखंडी का रिश्ता गहरा था| जब अभिमन्यु की शादी हुई तब आशीर्वाद देने के लिए शिखंडी वहां आया| रामायण- महाभारत में मंगल कार्यों में भाग लेकर आशीर्वाद देना जब रिवाज़ बन गया तो हमारे समाज ने इसे स्वीकार कर लिया|"[6] इसप्रकार हिजड़ा समूह मंगल कार्यों में भाग लेते है और अनुग्रह देते है|

ट्रांसजेंडर लोग सामाजिक जीवन से तिरस्कृत और निर्मम अत्याचारों के शिकार है| इसलिए वे अपनी जगहों से पलायन कर अपने वर्ग के लोगों के साथ समूह बनाकर जीते हैं|

तृतीय लिंग वैज्ञानिक कारण

हर एक व्यक्ति का दो sex chromosomes होते हैं, एक माता का और एक पिता का| 'xy cromsomes' से 'पुरुष' और 'xx cromozomes' से स्त्री का जन्म होता है लेकिन hormones के disorder से थर्ड जेंडर का जन्म होता हैं|[7]

जन्म के साथ हम एक जैविक लैंगिक पहचान लेकर पैदा होते हैं। वह जैविक पहचान हमारे जननांग के माध्यम से हमें नर या मादा प्रजाति से जोड़ती है, ये हमारी लैंगिक पहचान ही होती हैं कि हम ये जान पाते हैं कि हम आखिर हैं कौन- नर, मादा या कोई और। "इन दोनों से इतर समाज में जिनका अस्तित्व है वे तीसरे जन वे हैं जिन्हें हम पारंपरिक यौन-पहचानों के तहत समेट नहीं पाते हैं। इन तीसरे जनों का पारंपरिक यौन-पहचान में फिट नहीं हो पाना ही उन्हें अजनबी बना देता है। सिर्फ अजनबी नहीं, बल्कि अवांछित भी" हमारे समाज मे स्थित यह तीसरा लिंग है- किन्नर समुदाय जिसे हमारे समाज में हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, छक्का, उभयलिंगी, थर्ड जेंडर इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

फिल्मों में ट्रांसजेंडर जीवन का चित्रण

प्राचीन काल से लेकर आज तक के अनेक साहित्यिक रचनाओं में किन्नर जीवन का चित्रण मिलता हैं| कुछ फिल्मों भी किन्नर जीवन का चित्रण हैं| ट्रांसजेंडर पर आधारित सिनेमा संख्या में बहुत कम है| कल्पना लाजमी की 'दरमियाँ – इन बिटवीन'(1997), 'सड़क', योगेश भरद्वाज की 'शबनम मौसी'(2008), श्याम बेनेगल की 'वेलकम टू सज्जनपुर'(2009), 'मर्डर २', मलयालम में लोहितदास का 'सूत्रधारन', लाल जोस का 'चान्तुपोट्टू', डॉ संतोष सौपर्निक का 'अर्ध नारीश्वर', बिजु वर्मा का 'ओडूम राजा आडूम राणी', 'न्जान मेरिक्कुट्टी' आदि फिल्में ट्रांसजेंडरों के जीवन पर आधारित हैं| आगे चुने हुए कुछ हिन्दी फिल्मों में अभिव्यक्त तृतीय लिंगी विमर्श पर चर्चा करेंगे|

शबनम मौसी

शबनम नामक ट्रांसजेंडर की वास्तविक कहानी पर आधारित फिल्म है 'शबनम मौसी' | एक पुलिस अफसर की पत्नी बच्चे को जन्म देती है। हिजड़ा लोग उस बच्चे को आशीर्वाद देने के लिए पहुँचते हैं । लेकिन उन्हें पता लग जाता कि यह एक हिजड़ा बच्चा है। इसलिए वे उस बच्चे को अपने साथ ले जाते है । पुलिस अफसर और उनकी पत्नी बच्चे को वापस देने को कहते है चिल्लाते है| लेकिन वे बेपरवाह होकर बच्चे को लेकर चली जाती हैं | उनकी नेता काली माँ नामक हिजड़े को बच्चे का दायित्व सौपता है | वह बेहद खुशी के साथ बच्चे को स्वीकारता है और शबनम नाम रखता है |

शबनम ईश्वर पर खूब विश्वास करती है | हमेशा वह सोच समझकर बोलती है | वह अपनी माँ से बहुत प्यार करती है | मगर हिजड़ो की स्थिति दयनीय हो जाने के कारण गुरु माँ उन्हें सेक्स वर्क के लिए प्रेरित करती है| काली माँ इससे सहमत नहीं थी इसलिए नेता माँ से अपना विरोध प्रकट करती है | इस बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाती है| बीच में काली माँ को नेता माँ धक्का देता है| दीवार की एक कील पर सर टकराकर सर फूट जाती है और अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है| काली माँ की रोने की आवाज़ सुनकर शबनम वहां पहुँचती है | इस वक्त नेता माँ बाहर जाती है और रोने का बहाना करते हुए सभी लोगों से बताती है कि शबनम ने काली माँ की हत्या की | पुलिस उसे थाने ले जाती है | उसे खूब मारती -पीटती है | बाद में अपनी माँ के दाह संस्कार के लिए शबनम आती है | उसके बाद वह पुलिस से बचकर वहां से चली जाती है | वह मध्यप्रदेश में एक मंदिर में पहुँचती है | उस समय एक लड़की से कुछ गुंडे बलत्कार करने की कोशिश करते देखती है | शबनम उसे उन गुंडों से बचाती है | वह लड़की उसे अपने घर ले जाती है | वहां से पता चलता है कि वहां के अमीर नेता के बेटे से मीरा प्यार करती है | मगर अमीर नेता नरेंद्र बाबू उसके बेटे की शादी गरीब लड़की के साथ कराने को तैयार नहीं | शबनम की हत्या करने के लिए लल्ला नामक गुंडा को भेजा जाता है| लेकिन शबनम के मन की ताकत के सामने लल्ला हार मानता है | पहले शबनम लल्ला से मार खाती रही लेकिन गाँव का एक भी व्यक्ति उनकी सहायता के लिए आगे आता नहीं है| लल्ला को मारकर मौसी कहती है "लल्ला मैं अब तक इस उम्मीद से मार खा रही थी कि शायद एक हिजड़े को पिटता देखकर इन मर्दों की मर्दानी जाग जाए| लेकिन बेकार है| एक बात होता है लल्ला कि मेरी मौत ऊपर वालों ने तेरे हाथ से नहीं लिखे| जाग क्यों गए तुम लोग? जाओ सो जाओ, तुम्हारी आँखें तो दिन में भी नहीं खुलती और फिर ये तो रात है और रात तो सोने के लिए ही होते है| अपने डर और कायरता को सहनशीलता का नाम देकर पल्ला झाड़नेवालों आज एक हिजड़ा तुम लोगों में अपना अंश देख रहा है... मैं अपनी बिरादरी छोड़कर आयी थी यह सोचकर कि तुम जैसे इंसानों के बीच रहूँगी| मगर मुझको क्या पता था कि मेरी किस्मत में हिजड़ों के बीच रहना ही लिखा है| अगर मैं तन से हिजड़ा हूँ तो तुम मन से हिजड़ा हो ... तन का हिजड़ा फिर भी ताली पीट पीटकर जी लेता है लेकिन मन का हिजड़ा ताली पीटते हुए भी डरता है| एक मरा हुआ मर्द होने से कहीं बहुत अच्छा है एक ज़िन्दा हिजड़ा होना|"[8] गांववाले शबनम को पसंद करते हैं और प्यार के साथ सब उसे शबनम मौसी पुकारते है | धीरे -धीरे शबनम मौसी गांव वासियों की प्रिय मौसी बन जाती है | राजनीतिक चुनाव के अवसर पर एक पार्टी के दो नेताओं में मतभेद होने कारण एक को नीचा करने के लिए दूसरे नेता शबनम को चुनाव में लड़ने का अवसर देता हैं| लेकिन बाद में दोनों नेता एक हो जाने पर शबनम से आवेदन पत्र वापस लेने को कहते हैं लेकिन गाँव वासियों के कहने पर वह चुनाव लड़ने का निर्णय लेती है| पूरे गाँववासी एवं उसके दोस्त उसका साथ देता है| कई मुसीबतों को पार कर के शबनम चुनाव जीत जाती है | फिल्म यहां समाप्त होता है |

शबनम मौसी पचीस साल की एक ट्रांसजेंडर है | वह अपनी काली माँ और अन्य ट्रांसजेंडर लोगों के साथ ख़ुशी से ज़िन्दगी बिताती है | वह सबके साथ प्यार एवं शांति के साथ बातें करती है | उसकी माँ उसे अच्छे गुण सिखाती हैं | एक दुकानवाला शबनम से मोहब्बत करता है| मगर उसके बहन को शबनम पसंद नहीं थी इसलिए वह उनको अपने भाई से दूर जाने को कहती है | शबनम वहां से चुप -चाप निकल जाती है | शबनम का एक दोस्त उसे समझाता है कि -"इस समाज ने हमें इसलिए नहीं अपनाया कि हम समाज जैसे नहीं है|"[9] शबनम सबको प्यार की नज़रों से देखती हैं | लेकिन उसे प्यार कहीं से भी नहीं मिलता है| इसलिए उन पर अपनी माँ की ह्त्या का झूठा इलज़ाम लगा| इतने में भी वह सारी मुसीबतों का सामना करने का प्रयास करती है| जब पुलिस उसे दोषी कहकर खूब मारती है तब भी शबनम रोती नहीं, बल्कि उसे मार-मार के पुलिस की अपना गुस्सा समाप्त करने का आह्वान करती हैं|

अपनी बिरादरी से भागकर दूसरे गांव जाने पर भी शबनम को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है| लेकिन वहां के गांववासियों के बीच शबनम अपनी सद्प्रवृत्तियों की वजह से अच्छा नाम कमाती है | सब उसके आदेशों का पालन करते है | सब उसे मान -सम्मान देते है | इससे शबनम, शबनम मौसी बनी | वह एक हिजड़ा है, यह वहां के गांववासियों के लिए बुरी बात नहीं, बल्कि वे सब शबनम को अपने में से ही एक व्यक्ति की तरह देखते हैं| इसलिए चुनाव के समय बिना हिचक के सब शबनम से चुनाव में लड़ने की प्रार्थना करते हैं | शबनम उनके खुशी के लिए बड़े नेताओं के खिलाफ चुनाव में लड़ने के लिए राज़ी हुयी | फिल्म के अंत में शबनम मौसी चुनाव जीत जाती है | शबनम एक किन्नर है मगर वह अपना शरीर बेचकर पैसा कमाना नहीं चाहती है | वह काम करने में और दूसरों की मदद करने में विश्वास रखती हैं | इसलिए वह पूरे गांव की मौसी बन सकी|

शबनम को बचपन से ही घर से हिजड़ों द्वारा उठाया जाता हैं| लेकिन काली माँ ने आत्माभिमान और आत्मसम्मान से युक्त सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उसका गढ़न किया| शबनम की शारीरिक भाषा एकदम स्पष्ट एवं सशक्त है। वह सबके साथ सर उठाकर, आँखों में देखकर बात करती है। अत्यंत धैर्य के साथ अपनी बातों को पेश करती है। शबनम रोती है लेकिन हारती नहीं, कभी -कभी थक जाती है मगर गिरती नहीं। वे अपने आपको संभालने की क्षमता रखती है। वह ईश्वर के प्रति असीम प्रेम और श्रद्धा भाव रखती है। अपने आप पर विश्वास रखकर वह सभी मुजीबतों का सामना करती है। शबनम जैसे व्यक्ति केवल ट्रांसजेंडर लोगों के लिए ही नहीं बल्कि सभी लोगों के लिए एक रोल मॉडल बन जाते हैं।

प्रस्तुत फिल्म में किन्नर जीवन को एक नया दिशा प्रदान किया गया है | उनकी भाषा एवं वेश-भूषा सामान्य लोगों के जैसा दर्शाया है | शबनम की बातें कठोर ह्रदय को भी पिघलाने वाली हैं| इस फिल्म के माध्यम से किन्नर समाज व उनके जीवन की चुनौतियों पर बहस खडी होती है| हिन्दी फिल्मों में प्रारंभ काल से ही ट्रांसजेंडर या हिजड़ों का चित्रण मिलता है जो अधिकांश फिल्मों में परिहास पात्र है तो कुछ फिल्मों में

खलनायक के रूप में उनका चित्रण किया गया हैं| लेकिनं 'शबनम मौसी' जैसी फिल्म हमें उम्मीदें प्रदान करने वाली हैं| ये फिल्म ट्रांस जेंडर लोगों से न्याय करती है| भविष्य में भी ऐसी न्यायपूर्ण एवं अपने धर्म को सही ढंग से निभानेवाली फिल्मों का सिनेमा के क्षेत्र में आना अनिवार्य है| संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि ट्रांसजेंडर समुदाय की प्रतिबद्धता और समाज की बदली हुई मानसिकता, दोनों द्वारा ही इस समुदाय को मानवीय गरिमा युक्त बनाया जा सकता है| सिनेमा जैसा लोकप्रिय माध्यम इसमें सहयोग दे सकता हैं जिससे वे आगे बढ़ सकें|

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

१. राही मासूम रज़ाकुंवर पाल सिंह, सिनेमा और संस्कृति, भूमिका, पृष्ठ सं -१३, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र सं-2001
२. राही मासूम रज़ा कुंवर पाल सिंह, सिनेमा और संस्कृति, भूमिका, पृष्ठ सं -18, 19 , वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र सं-2001
३. तृतीय लिंग, डॉ विष्णुकांत अशोक, अस्तित्व और पहचान, सं. डॉ विजेंद्र प्रताप सिंह, पृष्ट संख्या -15
४. उर्मिला पोडवाल, पर्वती कुमारी- किन्नरसमाज: तीसरी ताली. पृ.सं. ३५ वाणी प्रकाशन, २०१९
५. डॉ दिलीप मेहरा (सं) हिन्दी साहित्य में किन्नर समाज-, पृ.सं. ३१, वाणी प्रकशन, २०१९
६. डॉ के वनजा, क्वीर विमर्श-लेस्बियन, गे, बाई-सेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, पृ. सं-१२७, १२८, वाणी प्रकाशन, प्र. सं-२०२१
७. डॉ अनन्या मंडल (MD)Causes of Gender Dysphoria (news-medical.net)
८. योगेश भरध्वाज -शबनम मौसी -2005
९. योगेश भरध्वाज -शबनम मौसी -2005